International Journal of Applied Research 2015; 1(12): 825-828

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2015; 1(12): 825-828
www.allresearchjournal.com
Received: 14-09-2015
Accepted: 16-10-2015

**डा0 देवेन्द्र प्रताप मिश्र**
अतिथि प्रवक्ता, प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, सी0 एम0 पी0 डिग्री कालेज, (इलाहाबाद विश्वविद्यालय), इलाहाबाद।

**Correspondence**
**डा0 देवेन्द्र प्रताप मिश्र**
अतिथि प्रवक्ता, प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, सी0 एम0 पी0 डिग्री कालेज, (इलाहाबाद विश्वविद्यालय), इलाहाबाद।

# मध्यसोन घाटी के पुरातात्विक अवशेषों का नवीन पुनरावलोकन : अधिवास प्रक्रिया के विशेष सन्दर्भ में

**डा0 देवेन्द्र प्रताप मिश्र**

सोन एक पहाड़ी नदी है जो शहडोल जिले के अमरकटंक की पहाड़ियों से निकलती है। यह विन्ध्य तथा सतपुड़ा की पर्वत श्रेणियों के बीचोबीच समानान्तर पश्चिम से पूर्व दिशा में प्रवाहित होती है। उक्त पर्वत श्रेणियों के अधिकांश क्षेत्रों की समुद्र तल से औसतन ऊँचाई लगभग 300 मीटर है। जिसका भूतात्विक जमाव दक्षिण पश्चिम मे दकन के लावा से निर्मित है, उत्तर पश्चिम में ग्रेनाइट का आधारभूत जमाव दृष्टिगोचर होता है तथा मध्य एवं उत्तर पूर्व का क्षेत्र विन्ध्य के बलुआ पत्थर से निर्मित हैं।मध्य प्रदेश ($23^0 30'$ उ0अ0, $80^0$ $00'$ पू0दे0)[1] में वार्षिक वर्षा औसतन पश्चिम में 800 मि0मी0 है, जो पूर्व में बढ़कर 2000 मि0मी0 हो जाती है। यहां के जंगलों में खाने योग्य अनेक प्रकार की वनस्पतियां एवं फल आदि मिलते हैं। यहां प्रागैतिहासिक मानव को उपकरण बनाने योग्य विविध प्रकार के शिला–खण्ड सहज प्राप्य हैं। इस कारण प्रागैतिहासिक मानव के आवास की दृष्टि से यह अत्यन्त सुलभ स्थान था।[2]
मध्य प्रदेश के अधिकांश जिलों से निम्न पुरापाषाण काल के उपकरण मिले हैं यथा होसंगाबाद, नरसिंहपुर, सिहोर, जबलपुर, खण्डवा, खरगोन, इन्दौर, सागर, दमोह, मन्दसोर, रतलाम, रायसेन, भोपाल, ग्वालियर, टीकमगढ़, गूना, दतिया, पन्ना, सतना,[3] रींवा, सीधी, शहडोल आदि इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं।[4] भौगोलिक व सांस्कृतिक अध्ययन की दृष्टि से सोन नदी घाटी के अपवाह क्षेत्र को तीन प्रमुख भागों में विभक्त किया गया हैं – ऊपरी सोन नदी घाटी, मध्य सोन नदी घाटी व निचली सोन नदी घाटी।
चूँकि मेरे अध्ययन का बिन्दु मध्य सोन नदी घाटी है यहाँ से निम्न पुरापाषाण काल के पुरास्थल तीन प्रकार की स्थितियों में मिलते हैं[5]:–

1. निचली पहाड़ियों के खुले स्थानों पर स्थित पुरास्थल
2. पहाड़ों के ढाल पर
3. नदियों के अनुभागों के जलोढ़ मिट्टी के जमाव।

मध्य सोन घाटी का विस्तृत सर्वेक्षण इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के जी0आर0 शर्मा के निर्देशन में सन् 1975 से 1977 के बीच किया[6] गया, जिसके फलस्वरूप न केवल प्रतिनूतन काल के भूतात्विक जमाव अपितु पाषाण काल के विभिन्न चरणों से सम्बन्धित 300 से अधिक पुरास्थल भी मध्य प्रदेश के सीधी जिले में प्रकाश में आए। मध्य सोन नदी घाटी के भूतात्विक जमावों में पशुओं के बहुसंख्यक जीवाश्म भी मिले।[7] इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग और संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलीफोर्निया स्थित बर्कले विश्वविद्यालय के नृतत्व विभाग के प्रागितिहासविदों द्वारा जी0आर0शर्मा एवं जे0डी0 क्लार्क के संयुक्त निर्देशन में सन् 1980 से 1982 के बीच पश्चिम में चुरहट से लेकर पूर्व में गोपद–सोन के संगम के समीप स्थित बघोर तक मध्य सोन नदी घाटी का भूतात्विक तथा पुरातात्विक विस्तृत सर्वेक्षण एवं उत्खनन किया गया है [8]।
आस्ट्रेलिया के मैक्वायर विश्वविद्यालय के मार्टिन विलियम्स तथा न्यूजीलैण्ड के कीथ रॉयस के अनुसार मध्य सोन घाटी के भूतात्विक अनुसंधान के फलस्वरूप आधारशिला के ऊपर जो जमाव प्रकाश में आए हैं, उन्हें चार भागों में विभाजित किया जा सकता है:
1. सिहावल जमाव, 2. पटपरा जमाव, 3. बाघोर जमाव व 4. खेतौही जमाव[9]।

सिंहावल सोन नदी के सबसे निचले एवं पुराने जमाव को सिहावल जमाव इसलिए कहा गया है क्योंकि सिहावल[10] नामक पुरास्थल के पास इसका सबसे अच्छा जमाव है, जहाँ इसका अध्ययन किया गया है। इस जमाव की मोटाई 1.50 मी0 है, जो चट्टान के ऊपर दिखती है। इस जमाव में कहीं–कहीं बलुआ पत्थर, क्वार्टजाइट तथा शेल के नुकीले छोटे टुकड़े मिलते हैं, जो बालू के महीन

कण के आकार से लेकर 50 सेमी0 तक के हैं। ये मिट्टी में चिपके हुए मिलते हैं। इसमें कहीं–कहीं पर 50 सेमी0 चितकबरी मिट्टी का जमाव मिलता है, जिसमें बलुआ पत्थर, क्वार्टजाइट एवं शेल के छोटे–छोटे टुकड़े मिलते हैं। इस जमाव का निर्माण अर्द्ध–शुष्क से लेकर मध्यम आर्द्र जलवायु के समय में हुआ। ग्रेवल जमाव अर्द्धशुष्क चरण में तथा मिट्टी का जमाव अर्द्ध–जलवायु के काल में हुआ। इसमें एश्यूलन परम्परा के हैण्ड एक्स, क्लीवर स्क्रैपर आदि मिले हैं। इन उपकरणों के ऊपर कुछ क्षेत्रों में घिसने–पिटने के लक्षण भी मिलते हैं, लेकिन अधिकांश उपकरण नवीन दृष्टिगोचर होते हैं। सिहावल जमाव की ऊष्मा दीप्ति विधि (OSLR) से अभी तक एक तिथि ज्ञात है, जो 103,000 ± 19800 B.P. है।[11] सिहावल जमाव बहुत दिनों तक खुला पड़ा रहा इसलिए इसके ऊपर क्षरण की प्रक्रिया क्रियाशील रही।

पटपरा[3] जमाव मध्य सोन नदी घाटी का दूसरा जमाव पटपरा[12] जमाव के नाम से जाना जाता है। इसका अध्ययन सीधी जिले के पटपरा नामक पुरास्थल पर सम्पन्न हुआ। जगह–जगह पर यह जमाव 10 मी0 मोटा है तथा सिहावल जमाव के ऊपर विषम–विन्यास के साथ यह दृष्टिगोचर होता है, लेकिन इन दोनों जमावों को देखने से ऐसा लगता है कि इनके बीच में समय का लम्बा व्यवधान रहा होगा। पटपरा जमाव मुख्य रूप से अपने लालरंग के कारण पहचाना जाता है इसमें बालू के कण तथा पत्थर के छोटे–छोटे टुकड़े, क्वार्टज, बलुआ पत्थर, शेल और क्वार्टजाइट पत्थर के टुकड़े मिलते हैं। यह जमाव काफी सीमा तक लौहयुक्त टुकड़ों से भरा दिखायी पड़ता है, इसलिए इसका रंग गहरा लाल दिखाई पड़ता है। इस जमाव के अन्दर अगेट, चाल्सेडनी आदि पत्थरों के टुकड़े घिसी–पिटी अवस्था में मिलते हैं। पटपरा जमाव उस समय हुआ, जब सोननदी का बहाव तीव्रगति पर था। सोन नदी की निक्षेप–क्रिया के परिणामस्वरूप इस जमाव का निर्माण हुआ है। पटपरा जमाव के ऊपर गहरी लाल/भूरी मिट्टी का जमाव दिखलाई देता है जिसकी मोटाई 1 मीटर के लगभग है। अनेक स्थानों पर इसकी ऊपरी जामव कट–छट गया है। पटपरा जमाव से मध्य पुरा पाषाण काल के उपकरण नवनिर्मित अवस्था में मिलते हैं, जिन पर घिसने पिटने के लक्षण नहीं दिखाई देते हैं। इस जमाव में हैण्ड–एक्स, क्लीवर आदि उभयपक्षीय उपकरण भी मिलते हैं। जिससे यह इंगित होता है कि एश्यूलन परम्परा उच्च प्राति नूतनकाल के प्रारम्भिक चरण तक चलती रही।

बाघोर[13] जमाव मध्य सोन नदी घाटी का सबसे विशिष्ट जमाव है। जिसकी मोटाई 20 मी0 के लगभग है। पटपरा तथा बाघोर जमाव के बीच भी समय का वैसा ही अन्तराल है जैसा कि सिहावल और पटपरा के बीच में है। बाघोर जमाव को दो भागों में विभक्त किया जाता हैः रूक्षवर्ग, महीन वर्ग।

बाघोर का निचला जमाव मोटी बालू का है। इसलिए इसको रूक्षवर्ग के जमाव की संज्ञा दी गयी है। इसमें क्वार्टजाइट, शेल, क्वार्टज, चाल्सेडनी, अगेट तथा चर्ट के टुकड़े मिलते हैं, जो मोटी बालू के आकार से लेकर पत्थर के छोटे टुकड़ों के आकार के हैं। कुछ स्थानों पर इस उपजमाव के ऊपर बालू तथा मिट्टी का पतला संस्तरित जमाव मिलता है।

मध्य सोन नदी घाटी में ज्वालामुखी के उद्गार से निकली हुई राख का जमाव मिलता है। इसका स्तरीकण क्रम कभी निश्चित नहीं है। कहीं–कहीं यह जमाव बाघोर जमाव के रूक्ष वर्ग के ऊपरी स्तर से मिला है। मार्टिन विलियम्स तथा एम0 क्लार्क ने इस जमाव की ओर सर्वप्रथम विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया। इसके बाद ही महाराष्ट्र में बोरी के जमाव की खोज हुई। मध्य सोन घाटी में घोघर से खेतौही नामक स्थान तक लगभग 30 वर्ग कि0मी0 के क्षेत्र में यह जमाव फैला हुआ मिला है। भारतीय भूगर्भ सर्वेक्षण के पी0के0 वसु, एस0 विश्वास तथा पी0के0 आचार्य के अनुसार[14] यह जमाव सुमात्रा के तोबा नामक ज्वालामुखी पर्वत के उद्गार से निकली हुई ''नवीनतम तोबा राखा के जमाव'' से सम्बन्धित है। पोटैशियम आर्गन तिथि विधि से इसकी तिथि 74000±20000 बी0पी0 है।[15] जो साक्ष्य उपलब्ध हैं, उनके अनुसार सुमात्रा में तीन बार ज्वालामुखी का उद्गार समय–समय पर हुआ था। इस जमाव का सम्बन्ध तीसरे तथा नवीनतम जमाव से है।

बाघोर का 'महीन वर्ग' रूक्षवर्ग के जमाव के ऊपर मिलता है। यह लगभग 10 मीटर मोटा जमाव है। जो अपेक्षाकृत महीन जलोढ़ मिट्टी से बना है। इस पूरे जमाव में कंकड़ मिलते हैं, किन्तु ज्यों–ज्यों ऊपर बढ़ते जाते हैं, कंकड़ों की संख्या बढ़ती जाती है। बघोर जमाव के निचले स्तरों से मध्य पुरापाषाण काल के घिसे हुए उपकरण मिले हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यें उपकरण इसके बहुत पहले अस्तित्व में आ चुके थे। जमाव की प्रक्रिया में लम्बी यात्रा तय करके ये उपकरण जमा हुए हैं। इसलिए इन उपकरणो को इस जमाव का समसामयिक न कहकर उससे बहुत पहले का कहना ही उचित होगा। बघोर जमाव के महीन वर्ग वाले ऊपरी स्तरों से उच्च पुरापाषण काल के उपकरण मिले हैं जो ''नवीन'' स्थिति में हैं। यह कहा जा सकता है कि इस जमाव के अन्तिम क्षणों में उच्च पुरापाषाण काल की संस्कृति अस्तित्व में आ चुकी थी।

बाघोर जमाव के विभिन्न स्तरों से बहुत बड़ी संख्या में पशुओं के जीवाश्म मिले हैं इन जीवाश्मों में बैल, गौर (भैंसा), दरियाई घोड़ा, घोड़ा, गैंड़ा, हाथी, तरह–तरह के हिरण, घड़ियाल तथा कछुआ के जीवाश्म उल्लेखनीय हैं।

खेतौही[16] जमाव मध्य सोन घाटी का सबसे नया जमाव है। इस जमाव का सम्यक् अध्ययन सोन और रेही के संगम के 1 कि0मी0 ऊपर सोन के दाहिने तट पर स्थित खेतौंही नामक पुरास्थल पर किया गया है। इसलिए इसे यह नाम दिया गया है। यह जमाव 10 मीटर मोटा है तथा सोन नदी के वर्तमान जलस्तर से मात्र 10 मीटर की ऊंचाईपर स्थित है। यह जमाव जलोढ़ मिट्टी तथा सिल्ट से निर्मित है, जिसमें यदा–कदा महीन बालू मिलती है। इस जमाव का निर्माण मध्यम आर्द्र जलवायु के काल में हुआ। इस जमाव से मध्य पाषाणकाल के लघुपाषाण उपकरण मिले हैं।

मध्य सोन नदी घाटी के विभिन्न जमावों का कालानुक्रम निर्धारित करने का भी प्रयास किया गया है। अनुमानतः सिहावल जमाव मध्य प्राति नूतन काल से ही सम्बन्धित है तथा इसे एक लाख वर्ष से अधिक पुराना समझा जा सकता है। पटपरा जमाव उच्च प्रातिनूतन काल से सम्बन्धित माना गया है। इसका समय एक लाख से तीस हजार वर्ष पहले तक समझा जाता है। बाघोर जमाव के 'रूक्षवर्ग' का समय 30 हजार वर्ष से 12000 वर्ष पहले तक निर्धारित किया गया है। महीन वर्ग का जमाव 12000 वर्ष पहले शुरू होती है। खेतोही जमाव का समय 'नूतन काल' माना जाता है। अर्थात् इसकी तिथि लगभग 10000 वर्ष पूर्व अनुमानित की गयी है।

मध्य सोन नदी घाटी में कैमूर से लेकर दक्षिण में कुंढेरी नाला के बीच में स्थित क्षेत्र का भी भूतात्विक दृष्टि से अनुसंधान किया गया। इस क्षेत्र में अधोलिखित जमाव प्रकाश में आए हैं। सबसे नीचे आधारभूत शेलयुक्त चूना पत्थर का जमाव है। इसके ऊपर भूरी मिट्टी का लगभग 90 सेमी0 मोटा जमाव है। भूरी मिट्टी के ऊपर ग्रेवल जमाव है, जिसके ऊपर पुनः भूरी मिट्टी का 3.20 मी0 मोटा जमाव है। अगला जमाव फिर एक ग्रेवल है जो 50 से0मी0 मोटा है, जिसके ऊपर गहरे भूरे रंग का 30 सेमी0 मोटा जमाव है। सबसे ऊपर 1 मी0 मोटी भूरे रंग की दुमट मिट्टी का जमाव है। उपर्युक्त इन जमावों का सह–सम्बन्धीकरण सोन घाटी के जमावों के साथ किया गया है।

मध्य सोन नदी घाटी में हुए पुरातात्विक अन्वेषण के फलस्वरूप पुरापाषाण काल, मध्य पाषाणकाल तथा नव पाषाण काल से सम्बन्धित अनेक पुरास्थल प्रकाश में आये है। पुरापाषाण काल एवं मध्य पाषाणकाल की संस्कृतियां अपने भूतात्विक परिप्रेक्ष्य में देखी जा सकती है। निम्न पुरापाषाण काल से सम्बन्धित 30 से अधिक

पुरास्थल अब तक प्रकाश में आ चुके हैं मध्य सोन नदी घाटी के सिहावल जमाव से निम्न पुरापाषाण काल के उपकरण प्राप्त हुए हैं। पुरापाषाण काल से सम्बन्धित प्रमुख उत्खनित पुरास्थलों में सिहावल, नकझरखुर्द तथा पटपरा प्रमुख हैं। मध्य सोन नदी घाटी में निम्न पुरापाषाणिक पुरास्थल सोन नदी के उत्तर और दक्षिण दोनों तरफ मिले हैं, लेकिन बहुसंख्यक पुरास्थल सोन नदी के उत्तर में ही है। नदी के उत्तर में छोटी पहाड़ियों की एक श्रृंखला नदी के समानान्तर है। कही–कहीं यह श्रृंखला जमीन की सतह से ऊपर दिखती है तो कहीं–कहीं जमीन के अन्दर चली गयी प्रतीत होती है। निम्न पुरापाषाण काल के पुरास्थलों से हैण्ड एक्स, क्लीवर, स्क्रैपर, नुकीले हैण्ड एक्स मिले हैं। किसी भी पुरास्थल से पेबल उपकरण नहीं मिले हैं। उपकरणों के निर्माण के लिए क्वार्टजाइट, चर्ट तथा यदा–कदा क्वार्ट्ज का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार पत्थरों के चयन में विविधता मिलती है। इस सन्दर्भ में यह उल्लेखनीय है कि सोन की तलहटी में चर्ट के शैल खण्ड बड़ी संख्या में मिलते हैं। क्वार्टज पर बने दो हस्त–कुठार प्राप्त हुए हैं। उपकरणों के निर्माण में तकनीकी दक्षता एवं पटुता का परिचय इसके निर्माताओं ने दिया है। फलक निकालने के लिए बेलनाकार हथौड़े के प्रयोग के संकेत छिछले फलक के निशान के रूप में मिलते हैं।

मध्य सोन घाटी के बहुत से पुरास्थलों से मध्य पुरापाषाण काल के पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। इस संस्कृति से सम्बन्धित अनेक कार्य स्थल मिले हैं। सोन नदी के पटपरा जमाव से भी इस तरह के उपकरण प्राप्त हुए हैं। उपकरणों में तरह–तरह के स्क्रैपर, प्वाइन्ट (नोक), छिद्रक एवं ब्लेड उल्लेखनीय है। उपकरण निर्माण के लिए क्वार्टजाइट एवं चर्ट जैसे पत्थरों का उपयोग किया गया है। यहां पर यह बात भी उल्लेखनीय है कि मध्य सोन नदी घाटी में अनेक पुरास्थलों पर पटपरा जमाव से हस्त–कुठार एवं विदारक प्राप्त हुए हैं, जिनसे यह पता चलता है कि मध्य पुरापाषाण काल में इस प्रकार के उपकरण अत्यल्प संख्या में प्रयुक्त होते रहे। नकझरखुर्द तथा पटपरा के उत्खनन से मध्य पुरापाषाणकि उपकरणों का भी एक स्तर मिला है।

मध्य सोन नदी घाटी में अभी तक लगभग 80 से अधिक उच्च पुरापाषाणिक पुरास्थल प्रकाश में आ चुके हैं। बाघोर जमाव के 'महीन वर्ग' से इस प्रकार के उपकरण प्राप्त हुए हैं। मध्य सोन नदी घाटी में कैमूर की तलहटी को उच्च पुरापाषाण काल के मानव ने अपने कार्य स्थलों के लिए चुना। इस प्रकार सम्पूर्ण सोन नदी घाटी में मानव केवल उच्च पूर्व पाषाण काल ही नहीं बल्कि पूर्व पाषाण काल व मध्य पाषाणकाल के औसत जमाव क्रमशः 1. 50 मीटर व 1 मीटर मोटा है जो यह इंगित करता है कि मानव यहां जीवन निर्वाह की दृष्टि से काफी लम्बे समय तक यहां रहा चूंकि इस काल में घर बनाने की परम्परा नहीं विकसित हो पायी थी किन्तु पेड़ों के नीचे, खुले आसमान में, व घघरिया– 2 जैसे स्थानों पर गुफा–कन्दराओं में भी रहने के अत्यधिक प्रमाण के साथ–साथ यहां जगह–जगह पुरापाषाणिक कब्र भी मिलते हैं।[17] इससे यह संकेत मिलता है कि मानव का कार्य क्षेत्र विस्तृत हो रहा था। उच्च पुरापााषाण काल के कतिपय पुरास्थलों का उत्खनन भी किया गया है जिनमें बाघोर प्रथम[18], बाघोर तृतीय[19] तथा रामपुर[20] उल्लेखनीय हे। उच्च पुरापाषाण काल के उपकरण इन उपर्युक्त पुरास्थलों पर भूतात्विक जमावों से मिले हैं। उच्च पुरापाषाण काल के उपकरणों में प्वाइन्ट, खुरचनी, चान्द्रिक तथा ब्लेड[21] आदि विशेष उल्लेखनीय है। ब्लेड पर बने उपकरण अधिक हैं। फलक पर भी अनेक उपकरण बने हैं। क्रोड से ब्लेड निकालने के लिए निपीड तकनीक का प्रयोग किया गया है। उपकरणों के कार्यांग को तेज करने के लिए पुर्नगठन के भी साक्ष्य मिलते हैं। अधिकांश उपकरण चर्ट पर बने हुए हैं।

अभी हाल ही में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के प्रो0जे0एन0 पाल, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के उपाचार्य डॉ0 ए0के0 दुबे, आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रो0 माइकल पेट्रागिलिया व डॉ0 माइकल हसलम के संयुक्त निर्देशन में सन् 2009 में हुए विस्तृत सर्वेक्षण व उत्खनन के फलस्वरूप कुछ नये पुरास्थल प्रकाश में आये। जिसका सीमित पैमाने पर उत्खनन सम्भव हो पाया जैसे ढाबा, घघरिया–2।

मध्य सोन नदी घाटी में स्थित घघरिया–2[22] सीधी जिले के अमिलिया थाने से (अमिलिया–हनुमना सम्पर्क मार्ग पर) लगभग 18 कि0मी0 उत्तर पिपराही से लगभग 20 कि0मी0 पूर्व वन विभाग के गेट से दक्षिण कैमूर की पहाड़ी पर यहा मध्यपाषाणिक शिलाश्रय स्थित है। यहां एक शिलाश्रय में मध्यपाषाणिक मानव द्वारा निर्मित चित्रों का अंकन है। जिसमें जंगली भैंसा, गैंडा, नृत्यरत मानव समुदाय व हिरण का शिकार करते हुए तीर भाले से युक्त मानव का चित्र चित्रित है तथा क्वार्टजाइट व चर्ट के बने लघु पाषाण उपकरण, स्क्रेपर, ब्लेड, बेधक आदि यहां बिखरे पड़े हैं।

मध्य सोन नदी घाटी में स्थित सीधी जिले में अमिलिया थाना से लगभग 15 कि0मी0 पश्चिम चुरहट मार्ग घोघरा के निकट एक नवीनतम मध्य पूर्व पाषाणिक स्थल प्रकाश में आया जिसे इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्राचीन इतिहास विभाग के प्रो0 जे0एन0 पाल ने खोजा। यहां पर 3 ट्रेंच डाले गये जिसको ढाबा–1, ढाबा–2 एवं ढाबा–3 का नाम दिया गया। ढाबा–2 के ट्रेंच सुपरवाइजर बी0एच0यू0 शोध छात्र हरिन्द्र प्रसाद राम व देवेन्द्र प्रताप मिश्र व आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के डॉ0 केरी थे। ढाबा–3 के सुपरवाइजर कनार्टक विश्वविद्यालय के जर्नादन बोरा व आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के माइकल हसलम ने निर्देशित किया। यहां से मध्य पूर्व पाषाणिक संस्कृति के पुरातात्विक अवशेष प्राप्त हुए जिनमें प्रमुख उपकरण तरह–तरह के स्क्रेपर, प्वाइन्ट, छिद्रक एवं ब्लेड उल्लेखनीय है। उपकरण निर्माण के लिए क्वार्टजाइट एवं चर्ट जैसे पत्थरों का उपयोग किया जाता था। जिसकी तिथि व अन्य रिपोर्ट www.Toba the Toba Super Erruption.com प्रकाशित हुई है।

मध्य सोन नदी घाटी से उच्च पुरापाषाणिक मानव के धार्मिक आचार– विचार के विषय में भी कुछ संकेत मिले हैं। बाघोर 1 से उपकरणों के धरातल के नीचे बलुआ पत्थर के ढेर से निर्मित चबूतरा मिला है। जिसके मध्य में एक विशेष प्रकार के पत्थर के कुछ टुकड़े प्राप्त हुए जिसको आपस में जोड़ने पर उनमें प्राकृतिक रूप से बनी हुई त्रिभुजाकार रंगीन आकृतियां दृष्टिगोचर होती हैं। आस–पास के क्षेत्रों में अब भी इस प्रकार के पत्थरों को दैवी शक्ति का प्रतीक मानकर पूजने की परम्परा है।[23] इससे यह संकेत मिलता है कि सम्भवतः उच्च पुरापाषाण काल के मानव के मन में इस प्रस्तर खण्डों के सन्दर्भ में ऐसी ही धारणा रही हो। मध्य सोन घाटी के आंचल में स्थित अनेक क्षेत्रों में अभी भी जनजातियां निवास करती है। आधुनिक सभ्यता का प्रकाश इस क्षेत्र में अब फैल रहा है। इसलिए इस क्षेत्र में यदि अत्यन्त प्राचीन धार्मिक विचार जीवित दिखलाई पड़े तो आश्चर्य की बात नहीं

## References


1 Gazeteer Madhya Pradesh: Governemnt of Madhya Pradesh, 1.
2 Historical Geography of Madhya Pradesh: Bhattacharya, 45-49.
3 Palaeolithic Maiher, Satna Distt., Madhya Pradesh A. Preliminary Report of Excavations: Pal, J.N., Pandey, J.N., 2-3.
4 Historical Geography of Madhya Pradesh: Bhattacharya, 42-59.
5 Palaeoenvironments and Prehistory in the Middle Son Valley: Sharma: G.R. & Clark J.D.
6 Palaeoenvironments and Prehistory in the Middle Son Valley: Sharma: G.R. & Clark J.D.

7 History to Prehistory: Sharma, G.R. and D. Mandal, 98.
8 Alluvial History of Middle Son Valley North Central India: Williams M.A.J., and Royce K.
9 Palaeoenvironments and Prehistory in the Middle Son Valley: Sharma: G.R. & Clark J.D.
10 Report on the Excavation and Analysis of a Upper Acheulean Assemblage from Sihawal II, Kenoyer, J.M. & Pal, J.N. 2.
11 Infrasred stimulated luminouscence ages for Prehistoric cultures in the Son & Belan Valley, North Central India , Pal, J.N., Williams, M.A.J., Jaiswal M., Singhavi A.K., Journal of the Interdisciplinary studies in History and Archaeology. 2005; 1:51-62.
12 Excavations and Analysis of Middle Palaeolithic Artifacts from Patpara, Madhya Pradesh, Robert J., Blumenschine Steven A., Brandt and Clark J.D. 45-47.
13 Preliminary Report on Excavations at the late Palaeolithic occupation site at Baghor. I, Locality: Kenoyer J.M. Mandal D., Mishra V.D., and Pal J.N., 55-57.
14 Toba ash on the Indian Subcontinent and its Implications for correlation of late Pleistoscene alluvium quaternary Research, Acharya S.K., Basu P.K., 1993:40:10-19.
15 Journal of Anthropological Archaeology the Palaeolithic of the Middle Son Valley North Central India: Changes in Hominin lithic technology and behaviour during the upper pleistocene: Jones Sach C., & Pal J.N. 323-341.
16 Journal of Anthropological Archaeology the Palaeolithic of the Middle Son Valley North Central India: Changes in Hominin lithic technology and behaviour during the upper pleistocene: Jones Sach C., & Pal J.N. 323-341.
17 History to Prehistory Sharma G.R. Mandal D. 4.
18 Preliminary Report on Excavation at the late Palaeolithic occupation site at Baghor-I. Kenayor, J.M. Mandal D, Mishra, V.D. and Pal J.N.
19 On occurrence with small Technology sin the upper member of the Baghor Formation at the Baghor III: Clark J.D. & R. Dreiman. R, 128.
20 An upper Palaeolithic surface collection from Rampur: Mishra V.D. Mandal D. Singha P. and Pal, J.N.
21 Preliminary Report on Excavation at the late Palaeolithic occupation site at Baghor-I. Kenayor, J.M. Mandal D, Mishra, V.D. and Pal J.N., 128.
22 Rock shelters with Paintings on the top of the Kaimur Escarpment at Ghagharia and at Account of the Excavation and Analysis of the Mesolithic occupation at the Ghagharia I Shelter : Brandt.S.A., Clark J.D, Gutin J.A., and Mishra B.B.,